# निवेशकों के भरोसे का परिचय

**आईपीएल का विवादों से भी नाता रहा है। कभी इसके प्रमोटर्स को लेकर विवाद हुए तो कभी इस पर फिक्सिंग प्रकरण का साया पड़ा और कभी इसे महामारी के प्रकोप की बाधाएं झेलनी पड़ीं। इन सबके बीच क्रिकेट को तमाशा बना देने के आरोप भी लगते रहे।**

आरती सिंह।।

2008 में उद्योगपति मुकेश अंबानी ने टी–20 लीग की सबसे हाईप्रोफाइल फ्रैंचाइज में गिनी जाने वाली मुंबई इंडियंस को 11.19 करोड़ डॉलर में खरीदा था। अब 13 साल बाद 2021 में लखनऊ को आरपीएसजी ने 7090 करोड़ रुपये (करीब 94 करोड़ डॉलर) और अहमदाबाद को सीवीसी कैपिटल पार्टनर्स ने 5625 करोड़ रुपये (करीब 75 करोड़ डॉलर) में खरीदा है। यह आईपीएल ब्रैंड की असाधारण कामयाबी का सबूत है।

लखनऊ को बीसीसीआई की ओर से तय बेस प्राइस (2000 करोड़ रुपये) से 250 फीसदी और अहमदाबाद को 160 फीसदी ऊंची कीमत मिली। ऊंची बोली के अलावा भी कई बातें हैं जो आईपीएल ब्रैंड को लेकर निवेशकों के भरोसे का परिचय देती हैं। उदाहरण के लिए, इस नीलामी प्रक्रिया में शामिल होने की जो शर्तें बीसीसीआई ने तय की थीं, वे भी काफी कुछ कहती हैं। इन शर्तों के मुताबिक जरूरी था कि बोली लगाने वाली कंपनियों का कम से कम 3000 करोड़ रुपये सालाना टर्नओवर हो।

कॉन्सर्शियम के मामलों में भी बीसीसीआई ने शर्त रखी थी कि उसमें तीन से ज्यादा निवेशक न हों। यानी मजबूत दावेदार ही बोली लगाएं। एक और बात है कि इस नीलामी से दुनिया की प्रतिष्ठित स्पोर्ट्स लीगों में इसकी पहचान और बढ़ेगी। सीवीसी कैपिटल पार्टनर्स एक प्राइवेट इक्विटी फर्म है। दुनिया की ला लीगा जैसी फुटबॉल लीग को ऊंचे मुकाम तक ले जाने में इस तरह के निवेशकों ने बड़ी भूमिका निभाई है। भारत के इस क्रिकेट ब्रैंड पर किसी प्राइवेट इक्विटी फर्म के भरोसा जताने का मतलब यह भी है कि इस लीग में आज के मुकाबले कहीं ज्यादा कमाई करने की संभावना है। वैसे, आईपीएल का विवादों से भी नाता रहा है। कभी इसके प्रमोटर्स को लेकर विवाद हुए तो कभी इस पर फिक्सिंग प्रकरण का साया पड़ा और कभी इसे महामारी के प्रकोप की बाधाएं झेलनी पड़ीं। इन सबके बीच क्रिकेट को तमाशा बना देने के आरोप भी लगते रहे।

लेकिन हर विवाद, हर संकट और हर चुनौती की आग से गुजरते हुए यह अपनी चमक बढ़ाता रहा। यही वजह है कि यह आज दुनिया में क्रिकेट का सबसे महत्वपूर्ण आयोजन बन गया है। एक ऐसा आयोजन, जिस पर न केवल दुनिया भर के क्रिकेटरों और क्रिकेट प्रेमियों की बल्कि वित्तीय जगत के दिग्गजों की भी नजरें टिकी होती हैं। अब तक आठ टीमों के साथ 60 मैचों के आयोजन का यह इवेंट 15वें सीजन से दस टीमों के साथ 74 मैचों का होने जा रहा है। उम्मीद की जाए कि इसकी कामयाबी बीसीसीआई और भारतीय क्रिकेट को ही नहीं पूरी दुनिया में क्रिकेट के इकोसिस्टम को भी मजबूती देगी।

## सच्चाई का फल

धर्म-दर्शन

**अशोक वोहरा।**

मैंने एक महात्मा की बात सुनी और उसी के मुताबिक काम किया तो देखिए सच्चाई का फल, मुझे राजमहल में अच्छी नौकरी मिल गई।" बहुत समय पहले की बात है, अचलगढ़ के राजा श्यामसिंह ने राज्य में घोषणा करवा दी कि उनके राज्य में वही योगी रह सकता है जो उसके सवालों का सही जवाब दे दे, अन्यथा उसे संन्यास छोड़कर विवाह करना पड़ेगा। राजा श्यामसिंह के सवाल थे, 'योगी और गृहस्थ को कैसा होना चाहिए? तथा योगी बनना ठीक है या गृहस्थ?' राज्य में अनेक योगी आए, पर संतोषजनक उत्तर न देने पर उन्हें गृहस्थ बनना पड़ा। एक दिन प्रातः काल ही एक योगी राजमहल के द्वार पर पहुंचा। द्वारपाल उसे राजा के पास ले गया। राजा ने उससे भी अपने सवाल दुहराए। योगी ने कहा, "हे राजन!

## संपादकीय

### नेपथ्य में चीन

22 वार्ता से ठीक पहले रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने चीन का नाम लिए बगैर उसके बारे में सबकुछ कह डाला था, लेकिन शिखर वार्ता से निकले बयानों में यह पूरा संदर्भ ही सिरे से गोल दिखा। पूतिन ने प्रशांत महासागर के एशियाई हिस्से में अभूतपूर्व तनाव की बात जरूर कही लेकिन कुछ इस तरह, जैसे चीन की तरफ से इस बारे में चिंता जता रहे हों। हमें ध्यान रखना होगा कि सारी नजदीकियों के बावजूद रूस के लिए भारत एक व्यापारिक सहयोगी ही है, खासकर डिफेंस ट्रेड का सहयोगी। रूस की अर्थव्यवस्था और उसकी सामरिक हनक काफी कुछ चीन पर ही निर्भर करती है। अफगानिस्तान एक ऐसा मसला है, जो रूस और भारत, दोनों के लिए लगभग समान रूप से महत्वपूर्ण है। इसके अलावा ईरान में इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास को लेकर भी दोनों देशों का नजरिया और उनके हित एक समान हैं। निश्चित रूप से एके–203 के उपयोग से भारतीय सेना की शक्ति बढ़ेगी, लेकिन इसके साथ भारत की एक गहरी तकलीफ भी जुड़ी है। एक बात तय है कि भारत उस तरह से हांफता हुआ अमेरिकी खेमे का मुल्क नहीं बनने जा रहा है, जैसा हाल–हाल तक लग रहा था। पूतिन के दिल्ली आने के बाद बाइडेन प्रशासन को इस बारे में सोचना पड़ेगा।

इस बार की भारत यात्रा में कुल पांच घंटे का समय ही वह यहां बिता पाए, यह बात भी पूतिन–मोदी शिखर वार्ता का वजन जरा कम करती हुई सी जान पड़ती है।

# एस–400 और एके–203

चंद्रभूषण।।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पूतिन को पिछले साल भारत आना था, जो कोविड महामारी के चलते संभव नहीं हुआ। इस बार की भारत यात्रा में कुल पांच घंटे का समय ही वह यहां बिता पाए, यह बात भी पूतिन–मोदी शिखर वार्ता का वजन जरा कम करती हुई सी जान पड़ती है। लेकिन ब्यौरों में जाएं तो भारत–रूस संबंधों के इतिहास में दोनों राष्ट्राध्यक्षों की यह मुलाकात अलग से रेखांकित करने लायक मानी जाएगी। इस शिखर वार्ता से पहले दोनों देशों के विदेश मंत्रियों और रक्षा मंत्रियों की 22 वार्ता हुई। रणनीतिक साझेदारी की यह सघन व्यवस्था अभी तक भारत केवल अमेरिका के साथ अपनाता रहा है और हाल में क्वाड के बाकी दोनों देशों ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ भी अपनाने लगा है। रूस से रिश्ते को भी उतनी ही इज्जत बख्शने से दुनिया में भारत की एक विशिष्ट छवि बनी है।

यह समय दुनिया के लिए कुछ असाधारण तनावों का है। लगातार ऐसी रिपोर्टें आ रही हैं कि मामूली उकसावे पर भी यूक्रेन में रूस और ताइवान में चीन अपनी फौजें उतार सकते हैं। ये उस तरह के तनाव नहीं हैं, जिन्हें लड़ाई के बिना हल नहीं किया जा सकता। लेकिन 2015 से ही अमेरिका समर्थन और अमेरिका विरोध का जो ध्रुवीकरण दुनिया में बनने लगा था और

डॉनल्ड ट्रंप के कार्यकाल में अपने चरम पर पहुंचा जो नीचे आने का नाम नहीं ले रहा है, उसी का तकाजा है कि इन दोनों जगहों पर तनाव घटाने के लिए कहीं से कोई पहलकदमी सुनने में नहीं आ रही है। ऐसे माहौल में व्लादिमीर पूतिन अपने निकट सहयोगी चीन की नाराजगी का जोखिम उठाकर भी न सिर्फ भारत आए बल्कि रणनीतिक महत्व के कई समझौते भी किए, इससे दोनों देशों के लिए एक–दूसरे के महत्व का पता चलता है।

भारत की सुरक्षा के लिए पूतिन के इस दौरे से जुड़ी दो पहलकदमियां बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। एक एस–400 डिफेंस सिस्टम के उपकरणों के भारत आने की शुरुआत और दूसरा, भारतीय और अमेरिकी प्रतिरक्षा कंपनियों द्वारा साझे में खड़ी की गई एक कंपनी द्वारा अमेठी में एके–203 राइफलों का साझा निर्माण। इन दोनों समझौतों पर काम सालों लंबी एक प्रक्रिया में जारी है, लेकिन इन्हें लागू करने में कई भीतरी–बाहरी झंझटों का सामना भी करना पड़ा है। कई तरह के राडारों और मिसाइलों की जटिल प्रणाली एस–400 की खरीद को लेकर अमेरिका का सख्त एतराज रहा है। उसका काट्सा एक्ट ठीक इसी संदर्भ में तुर्की पर लागू भी हो चुका है, जो उसका अपना नाटो सहयोगी है। इस एक्ट के तहत अमेरिका अपने 'शत्रु देशों' से हथियार खरीदने वाले देशों पर कई तरह के प्रतिबंध लगा सकता है। हालांकि भारत को इस खास मामले में काट्सा से बरी रखने की बात अमेरिका के रणनीतिक हलकों में कही जाती रही है।

इधर काफी समय से क्वाड को लेकर अमेरिका के रणनीतिकार अपनी कामयाबी के गीत गाते नजर आ रहे हैं। एस–400 की खरीद के बाद भारत को उन्हें अलग से यह नहीं बताना पड़ेगा कि वे हमें अपने बाकी सहयोगियों से जरा अलग ही मानकर चलें। इसके बावजूद अगर वे अपनी पर अड़े रहते हैं और किसी प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की तरफ बढ़ते हैं तो लोकतांत्रिक देशों की गोलबंदी जैसे अमेरिकी प्रयास अपना अर्थ ही खो बैठेंगे। यहां से आगे एस–400 के बारे में इतना ही कहने को बचता है कि यह एक श्रेष्ठ सुरक्षा प्रणाली है। चीन की ओर से खतरा नया है, सो योजना बदलनी पड़ सकती है।

### सूडोकु नवताल-5381

सरल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 6 | | 3 | | 8 | 9 | | 7 |
| | 1 | | 9 | | 6 | | 5 | 4 |
| | | | | | | 8 | | |
| | 4 | | 5 | | | | 8 | |
| 2 | | 5 | | 4 | | 6 | | 1 |
| | 3 | | | | 1 | | 7 | |
| | | 3 | | | | | | |
| 5 | 9 | | 7 | | 2 | | 6 | |
| 7 | | 6 | 4 | | 3 | | 9 | 2 |

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5380 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 7 | 2 | 3 | 8 | 4 | 1 | 9 | 6 |
| 8 | 6 | 1 | 9 | 2 | 5 | 7 | 3 | 4 |
| 3 | 9 | 4 | 1 | 6 | 7 | 5 | 8 | 2 |
| 2 | 5 | 7 | 4 | 1 | 3 | 8 | 6 | 9 |
| 4 | 8 | 6 | 5 | 9 | 2 | 3 | 7 | 1 |
| 1 | 3 | 9 | 6 | 7 | 8 | 4 | 2 | 5 |
| 6 | 2 | 3 | 7 | 4 | 1 | 9 | 5 | 8 |
| 9 | 4 | 5 | 8 | 3 | 6 | 2 | 1 | 7 |
| 7 | 1 | 8 | 2 | 5 | 9 | 6 | 4 | 3 |

अपना ब्लॉग

## विदेशी तकनीक के सहारे आत्मनिर्भर

**मोहन।** पिछले तीस वर्षों से भारतीय सेना का रेगुलर हथियार बनी स्वनिर्मित इंसास राइफलें एके–203 की एंट्री के साथ ही चलन से बाहर कर दी जाएंगी। दुनिया के सारे देश क्रमशः आयातित से स्वनिर्मित हथियारों की तरफ बढ़ रहे हैं, लेकिन हम लड़ाई के सबसे बुनियादी हथियार के मामले में भी स्वनिर्मित से पीछा छुड़ाकर विदेशी तकनीक के सहारे आत्मनिर्भर होने का दावा कर रहे हैं। ध्यान रहे, करीब दस साल की रिसर्च के बाद डीआरडीओ ने इंसास राइफलों का ढांचा खड़ा किया था। करगिल युद्ध और एंटी–नक्सल ऑपरेशनों में इनकी कुछ खतरनाक खामियां देखने को मिलीं। मसलन, ट्रिगर जाम हो जाना और कई गोलियां लगने के बाद भी शत्रु का जिंदा बच जाना। जरूरत समय से इन खामियों को दूर करने की थी। इस तरह की कोशिशें हुई होंगी, लेकिन फैसला इन्हें हटाने का ही हुआ।